IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बाल्यावस्था का सर्वांगीण विकास और शिक्षा की भूमिका का अध्ययन :-

अरुण कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर ;शिक्षाशास्त्र विभाग द्ध

रजत कॉलेज लखनऊ

सारांश:-

शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं होता हैए बल्कि शिक्षा के माध्यम से नई चीजों को सीखने के साथ अपने ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है। बच्चे हमारे देश का भविष्य हैए इसलिए हमें उन्हें अच्छी नैतिकता औरबेहतर तरीके से शिक्षा ग्रहण करने पर जोर देना चाहिएए ताकि वे भविष्य में एक जिम्मेदार व्यक्ति बन सके।

शैशवावस्था के बाद बालक बाल्यावस्था में प्रवेश करता है। बाल्यावस्था में आने तक बालक इतना परिपक्व हो जाता है कि वह अपने आस.पास के वातावरण से पूर्ण रूप से अपरिचित नहीं रहता है। बाल्यावस्था को मानव जीवन का स्वर्णिम काल कहा जा सकता है क्योंकि बाल्यावस्था बालक के व्यक्तित्व निर्माण की अवस्था होती है। यह बालक की निर्माणकारी अवस्था होती है। इस अवस्था में वह जसि वैयक्तिक एवं सामाजकि व्यवहार को तथा शिक्षा सम्बंधी बातों को सीखता है वह उसके भावी जी वन की आधारशिला होती है। बालक के शैक्षिकए सामाजकिए नैतिक एवं संवेगात्मक पक्षो का विकास होता है।

शिक्षा से बच्चों में यह भी समझने की क्षमता उजागर होती हैए कि उनके लिए क्या सही है और क्या गलत है। शिक्षा का पहला अनुभवए बच्चा अपने घर से सीखता है। एक बच्चे के जीवन में उसका पहला विद्यालय ;प्रथम पाठशालाद्ध परिवार होता है। अतः शिक्षा का मुख्य कार्य बालक के विकास में सहायता देना है।

शब्द कुंजी :. बाल्यावस्था एबाल्यावस्था में शिक्षाए शारीरिक विकासए मानसिक विकास एसामाजिक विकासएसंवेंगात्मक विकास

प्रस्तावना :-

बाल्यावस्था वास्तव में मानव जीवन का वह स्वर्णिम समय हैए जिसमें उसका सर्वांगीण विकास होता है। फ्रायड यद्यपि यह मानते हैंए कि बालक का विकास 5 वर्ष की आयु तक ही जाता हैण लेकिन बाल्यावस्था विकास की यह संपूर्णता गति प्राप्त करती हैए और एक परिपक्व व्यक्ति के निर्माण की ओर अग्रसर होती है।

शैशवावस्था के बाद बाल्यावस्था का आरम्भ होता है। यह अवस्थाए बालक के व्यक्तित्व के निर्माण की होती है। बालक में इस अवस्था में विभिन्न आदतोंए व्यवहारए रूचि एवं इच्छाओं के प्रतिरूपों का निर्माण होता है।

विकास की नींव बाल्यावस्था में ही जमबूत होती हैए जो आगे चलकर उसे एक परिपक्व मानव बनाती है। बाल्यावस्था मेंजो व्यवहार बालक के साथ किया जाता है उसका प्रभाव बालक के व्यक्तित्व पर दूरगामी होता है। मानव जीवन में बाल्यावस्था के महत्व पर प्रकाश डालते हुए जोन्सए सिमसन एवं ब्लेयर का कहना हैण शैक्षिक दृष्टिकोण सेजीवन चक्र में बाल्यावस्था से अधिक महत्वपूर्ण अवस्था और कोई नहीं है। जो अध्यापक इस अवस्था के बालकों को शिक्षा देते हैंए उन्हें बालकों कीए उनकी आधारभूत आवश्यकताओं काए उनकी समस्याओं का और उन परिस्थितियों की पूर्णजानकारी होनी चाहिएए जो उनके व्यवहार को रूपान्तरित और परिवर्तित करती है।

सामान्यतः बाल्यावस्था लगभग 6 से 12 वर्ष तक मानी जाती है। यह अवस्था आगे आने वाले जीवन की तैयारी की अवस्था होती है। बालक की शिक्षा आरम्भ करने की सबसे उपयुक्त आयु मानी गयी है। इसीलिए मनोवैज्ञानिकों ने इस आयु को श्प्रारम्भिक विद्यालय की आयुश कहा गया है

बाल्यावस्था में शारीरिक विकास:-

सामान्य रूप में यदि हम देखें तो यह स्पष्ट होता है कि शारीरिक विकास के अन्तर्गत बालक का कदए भारए शरीर का विकासए लम्बाई आदि आते हैं। वाहा अंगों के साथ.साथ आंतरिक अंगों का भी विकास होता है और इनका उत्तम प्रकार से विकास बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को निर्धारित करता है। बाल्यावस्था में शारीरिक विकास निम्न प्रकार से होता है.

भार

इस अवस्था में बालिकाओं का भार बालकों की अपेक्षा अधिक होता है क्योंकि बालिकाओं में बालकों की अपेक्षा किशोरावस्था जल्दी आ जाती है। बालिकाओं के वजन में 9 से 12 वर्ष के बीच वृद्धि की दर तीव्र रहती है और प्रतिवर्ष लगभग 14 पौण्ड वजन बढ़ता है। इसके विपरीत बालकों का वजन कम बढ़ता है।

लम्बाई

लम्बाई में होने वाली वृद्धि पर वैयक्तिक भिन्नताओंए संतुलित जभोनए पर्यावरणए बीमारी एवं आनुवांशिक कारकों का प्रभाव पड़ता है। इस अवस्था में लम्बाई धीमी गति से बढ़ती है तथा बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की लम्बाई अधिक बढ़ती है।

हड्डियां

इस अवस्था में आते.आते हड्डियों की संख्या में वृद्धि हो जाती है तथा इनकी संख्या 270 से बढ़कर 350 हो जाती है।

बाल्यावस्था में मानसिक विकास :-

बाल्यावस्था में मानसिक विकास से तात्पर्य बालक की सोचनेए समझनेए स्मरण करनेए विचार करने तथा समस्या समाधान करनेए ध्यान लगाने की शक्तिए प्रत्यक्ष ज्ञान और संकल्पनाए जिज्ञासा एवं चिंतन आदि से है। बाल्यावस्था में मानसिक योग्यताओं का लगभग पूर्ण विकास हो जाता है। बालक की मानसिक विशेषताओं को निम्न रूप से स्पष्ट किया जा सकता है।

• बाल्यावस्था के प्रथम वर्ष में अर्थात् छठे वर्ष में बालक सरल प्रश्नों के उत्तर दे सकता है। बिना रुके **15** तक गिनती सुना सकता है। समाचार पत्रों में बने चित्रों के नाम बता सकता है।

सातवें वर्ष में छोटी.छोटी घटनाओं का वर्णन करने में सक्षम होता है तथा विभिन्न वस्तुओं को समझने लगता है।

बाल्यावस्था में सामाजिक विकास :-

बालक लगभग **6** वर्ष की अवस्था में पारिवारिक वातावरण से निकलकर विद्यालय के सम्पर्क में आता है। विद्यालय में बालक सामाजिक नियम सीखने के साथ. साथ नये मित्रों के साथ सम्पर्क स्थापित करना सीख जाता है। वह विद्यालय में होने वाले सामाजकि एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी अपनी पूर्ण सहभागिता का प्रदर्शन करता है। बालक में चंचलता होने के कारण वह किसी भी मित्र मंडली का सदस्य बन जाता है और यह मित्र मंडली उचित.अनुचित कार्यों के लिए दिशा निर्देश प्रदान करती है जसिसे बालक के सामाजकि विकास को नयी दिशा मिलती है। इस अवस्था के अंतिम काल को श्टोली अथवा समूह की आयुश् कहा गया है। परिणामतः बालक में स्वतंत्रता सहायता एवं उत्तरदायित्व के गुणों का विकास होता है।

बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास :-

बालक की बाल्यावस्था को संवेगात्मक विकास का अनोखा काल माना जाता है। सम्पूर्ण बाल्यावस्था में बालक के संवेगों में अस्थिरता देखने को मिलती है। बाल्यावस्था में संवेगों की अभिव्यक्ति एक विशिष्ट प्रकार से होने लगती है। संवेगों में सामाजकिता का भाव आने से समाज के अनुकूल व्यवहार करने के लिए प्रेरित होने लगता है। इस प्रकार वह संवेगों की अभिव्यक्ति पर नियंत्रण करना सीख जाता है। भाषा ज्ञान सुदृढ़ होने से वह अपने भावों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से करना प्रारम्भ कर देता है। इसके साथ ही साथ बालक के अंदर भय के संवेग सक्रिय हो।

अध्ययन की आवश्यकता :-प्रारंभिक बाल्यवास्था के बाद जब बालक बाल्यावस्था में प्रवेश करता है ।तब वह थोड़ा समाजिक होने लगता है। उसके शरीर में बदलाव आने लगते है उसके संवेग मुखर होने लगते है यही वह अवस्था होती है जब बालक अपने घर से निकल कर स्कूल जाना शुरू करता है जहाँ वह पहली बार अपने से अलग या अनजाने लोगो से मिलता है। यही से उसका उसका एक नया काल शुरू होता है ।जहाँ वह पढ़ाई के साथ सामाजिकता भी सीखता है ।शिक्षा ही बालक के अंदर समाज के साथ सामंजस्य स्थापित करने की कला विकसित करती है ।

अध्ययन के उद्देश्य :-

1 रू. बाल्यावस्था में सर्वांगीण पक्षो के विकास का अध्ययन करना ।

2 रू. बाल्यावस्था में शिक्षा की उपयोगिता का अध्ययन करना ।

3 रू. बाल्यावस्था को प्रभावित करने वाले कारको का अध्ययन करना ।

बाल्यावस्था में विकास की प्रक्रिया :-

यद्यपि बाल्यावस्या को **6.12** साँयु तक माना जाता है। हरलोंक ने इसे **6** वर्ष से लेकर **12** वर्ष तक को बीच का समय माना है।लगभग **6.7** वर्ष में बालक एवं बालिकाओं के दूध के दांत टूटने लगते हैं तथा उनके स्थान पर स्थाई दांत निकलने लगते हैं तथा **12.13** वर्ष तक सभी स्थाई दांत निकल आते हैं।

बाल्यावस्था के प्रारम्भ से लेकरए अंत तक बालक एवं बालिकाओं के सभी अंगों का लगभग पूर्ण विकास हो जाता है। बाल्यावस्था में बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में विकास प्रक्रिया तीव्र गति से होती है।

1ण् शारीरिक व मानसिक स्थिरता:-

6 या **7** वर्ष की आयु बाद मालक के शारीरिक और मानसिक विकास में स्थिरता आ जाती है। यह स्थिरता उसकी शारीरिक व मानसिक शक्तियों को दृढ़ता प्रदान करती है।

शारीरिक और मानसिक स्थिरता बाल्यावस्था की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है।

बालक की जिज्ञासा विशेष रूप से प्रबल होती है। यह जिन यस्तुओं के संपर्क में आता हैण् उनके बारे में प्रश्न पूछकर हर तरह की जानकारी प्राप्त करना चाहता है।

2ण् रचनात्मक कार्यों में आनन्द.

बालक को रचनात्मक कार्यो में विशेष आनन्द आता है। यह साधारणत घर से बाहर किसी प्रकार का कार्य करना चाहता है।

3रू.सामाजिकता और संवेंगात्मकता :-

इस अवस्था में बालक सामाजिक होने लगता है वह टोली बनाता है । अपने से बड़े लोगो के समूह में रहता है।वह समाज में अपने आप को स्थापित करने की कोशिस करने लगता है।साथ ही उसके अंदर संवेग प्रभावी होना शुरू होने लगते है ।

इस अवस्था में बालक में नेता बनने की भावना अधिक दिखाई देती है। अच्छे गुणों के आधार पर वह प्रशंसा का पात्र बन जाता है और अपने समूह का नेता चुन लिया जाता है। बालक अच्छे एवं बुरे किसी भी समूह के सदस्य बन सकते हैं। अच्छे कार्यों में लिप्त समूह को समाज द्वारा स्वीकृति प्राप्त होती है तथा अवांछित कार्यों में लीन समूह समाज में निंदा का पात्र होता है।

5रू. नैतिक गुणों का विकास.

स्ट्रैग के अनुसार छः सात और आठ वर्ष के बालकों में अच्छे.बुरे के ज्ञान का एवं न्यायपूर्ण व्यवहसाए ईमानदारी और सामाजिक मूल्यों की भावना का विकास होने लगता है।ष

.रू बाल्यावस्था में शिक्षा का स्वरूप .

इस अवस्था में बालक विद्यालय में जाने लगता है और उसे नवीन अनुभव प्राप्त होते है। औपचारिक तथा अनौपचारिक शैक्षिक प्रक्रिया के मध्य उसका विकास होता है।

बाल्यावस्था शैक्षिक दृष्टि से बालक के निर्माण की अवस्था है। इस अवस्था में बालक अपना समूह अलग बनाने लगते हैं। इसे चुश्ती की आयु भी कहा गया है। इस

अवस्था में शिक्षा का स्वरूप इस प्रकार होता है ब्लेयरए जोन्स व सिम्पसन ने लिखा है.

श्बाल्यावस्था यह समय हैए जब व्यक्ति के आधारभूत दृष्टिकोणोंए मूल्यों और जायकाँ का बहुत सीमा तक निर्माण होता है।ष

भाषा के ज्ञान पर बल :-

स्ट्रंग के अनुसार इस अवस्था में बालकों की भाषा में बहुत रूचि होती है। उक्त इस बात पर बल दिया जाना आवश्यक हैण कि बालकए भाषा का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करे।

उपयुक्त विषयों का चुनाव

बालक के लिए कुछ ऐसे विषयों का अध्ययन आवश्यक है जो उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके और उसके लिए लाभप्रद भी हो। इस विचार से निम्नलिखित विषयों का चुनाब दिया जाना चाहिए।

रोचक विषय सामग्री.

बालकों की रूचियों में विभिन्नता और परिवर्तनशील होती है। अतः उसकी पुस्तकों की विषय सामग्री में रोचकता और विभिन्नता होनी चाहिए।

सामाजिक गुणों का विकास.

किर्क पैट्रिक ;ज्ञपताचंजतपबाद्ध ने बाल्यावस्था को श्प्रतिद्वन्द्वात्मक समाजीकरण का काल माना है। अतः विद्यालय में ऐसी क्रियाओं का अनिवार्य रूप से संगठन किया जाना चाहिएए जिनमें भाग लेकर बालक में अनुशासनए आत्म.नियंत्रणए सहानुभूति सहयोग आदि सामाजिक गुणों का अधिकतम विकास हो।

नैतिक शिक्षा .

पियाजे ;च्यंहमजद्ध ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि लगभग 8 वर्ष का बालक अपने नैतिक मूल्यों का निर्माण और समाज के नैतिक नियमों में विश्वास करने लगता है। उसे इस मूल्यों का उचित निर्माण और इन नियमों में विश्वास रखने के लिए नियमित रूप से नैतिक शिक्षा दी जाती है।

. बालक के विकास में शिक्षा की भूमिका .

शिक्षा एक बच्चे के भविष्य की भलाई की नीव है। बच्चों की शिक्षा उन्हें बेहतर जीवन जीने में मदद करने के लिए विभिन्न अवसर पैदा करती है। यह बड़े पैमाने पर समाज को आकार देने में भी मदद कर सकता है। सही शिक्षा के साथ एक बच्चा देश को तेज गति से विकसित और प्रगति करने में मदद कर सकता है।

शिक्षा का मुख्य कार्य बालक के विकास में सहायता देना है। अतः शिक्षक को बालक के विकास की अवस्थाओं का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। शिक्षक बालक में होने वाली परिवर्तनों के अनुसार अपने पाठ्यक्रम की व्यवस्था कर सकता है। सहगामी क्रियाओं क आयोजन कर सकता है।

बाल्यावस्था वास्तव में मानव जीवन का वह स्वर्णिम समय है जिसमें उसका सर्वांगीण विकास होता है।

बाल्यावस्था को प्रभावित करने वाले कारक :-

1ण् बालक की शारीरिक रचना एवं स्वास्थ्य अपने माता पिता से प्रभावित होता है। सामान्यतः स्वस्थ माता.पिता के बच्चों को स्वास्थ्य भी अच्छा ही होता है। शारीरिक विकार वाले माता.पिता की संतान भी तदनुरूप शारीरिकरूप से दुर्बल होते हैं।

2ण् बालक के समुचित विकास पर उसके आस.पास के वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। उनके स्वाभाविक विकास में उनका वातावरण जैसे.शुद्ध वायुए स्वच्छताए सूर्य का प्रकाश आदि महत्वपूर्ण रूप से सहायक होते हैं। बालक के पहनने के कपड़े एवं रहने का स्थान स्वच्छ तथा जभोन में पौष्टिकता उसके शारीरिक विकास को गति प्रदान करता है। बालक के शारीरिक विकास पर उसके द्वारा सेवन किए जाने वाले जभोन का भी प्रभाव पड़ता

3ण बालक का शारीरिक स्वास्थ्य उसके मानसिक विकास को सर्वाधिक प्रभावित करता है क्योंकि जब तक हम पूर्णतः स्वस्थ नहीं होंगे तब तक हम किसी भी कार्य को बुद्धिमत्ता के साथ नहीं कर सकते। अतः बालक की मानसिक स्वस्थता उसकी शारीरिक स्वस्थता से प्रत्यक्ष रूप से सम्बंधित है।

4ण बालक के सामाजकि विकास पर कुछ सीमा तक उसके वंशानुक्रम का भी प्रभाव पड़ता है।

5ण बालक का शारीरिक एवं मानसिक विकास भी उसके सामाजकि विकास को प्रभावित करता है। स्वभावतः यदि बालक शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं मानसिक रूप से परिपक्व होगा तभी उसमें सामाजकिता का तीव्रता से विकास सम्भव है।

6ण परिवार की आर्थिक स्थिति भी बालक को अधिक अथवा कम सामाजकि बनने में सहायक होती है। धनी परिवार के बालक के रहने का स्थान तथा वहाँ का वातावरण निर्धन परिवार की अपेक्षा अधिक स्वस्थ होता है। उनके घर में सभी साधन उपलब्ध होते हैं। जो बालक में उचित सामाजकि गुणों के विकास में सहायक होते हैं।

7णबालक के संवेगात्मक व्यवहार को थकान अत्यधिक प्रभावित करती है। थकान के कारण वह क्रोधए चिड़चिड़ेपन जैसे अवांछित संवेग अभिव्यक्त करने लगता है।

8ण शारीरिक स्वस्थ्ता भी उसके संवेगात्मक विकास को उचित दिशा प्रदान करती है। बालक यदि शारीरिक रूप से स्वस्थ होगा तो वह किसी भी कार्य को पूर्ण उत्साहए लगन एवं प्रसन्नतापूर्वक करने का प्रयत्न करता है अतः बालक के स्वास्थ्य की दशा का उसके संवेगात्मक व्यवहार से घनिष्ठ सम्बंध होता है।

9ण बालक के संवेगात्मक व्यवहार को न केवल स्वास्थ्य वरन् मानसिक योग्यता भी प्रभावित करती है। अधिक मानसिक एवं बौद्धिक योग्यता एवं क्षमता वाले बालकों का संवेगात्मक

निष्कर्ष :-

फ्रॉयड और अनुयायियों ने बाल्यावस्था को बालक का निर्माणकारी काल मानकर इस अवस्था को अत्यधिक महत्व दिय है। उनका कहना है कि इस अवस्था में बालक जिन वैयक्तिकए सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी आदतों एवं व्यवहारों के प्रतिमानों का निर्माण कर लेता है। उनकी रूपांतरित करना बहुत कठिन हो जाता है। इस दृष्टि से प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षकों पर बालकों का निर्माण करने का महान उत्तरदायित्व है। लगभग ऐसे ही विचारों को व्यक्त करते हुए ब्लेयरए जोन्स व सिम्पसन ने लिखा है.

ष्शैक्षिक दृष्टिकोण से जीवनचक्र में बाल्यावस्था से अधिक महत्वपूर्ण और कोई अवस्था नहीं है। जो अध्यापक इस अवस्था के बालकों को शिक्षा देते हैंए उन्हें बालकों को उनकी आधारभूत आवश्यकताओं काए उनकी समस्याओं का और उन परिस्थितियों का पूर्व ज्ञान होना चाहिएए जो उनके व्यवहार को रूपांतरित और परिवर्तित करती है।

अतः इस अवस्था में शिक्षा का यथार्थवादी स्वरूपए जो उनकी आवश्यकताए प्रकृति तथा मूल प्रवृत्तियों के शोधन पर आधारित होए यह बालकों के मूलभूत गुणों को विकसित करने तथ्था उन्हें स्वरूप सजग नागरिक बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1रू. प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा **ए**राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नयी दिल्ली।

2रू. बाल्यावस्था और किशोरावस्था को अवधारणा **एमहलंद र्वी** एपृष्ठ .5.11

3रू. अरुण कुमार सिंह **ए** शिक्षा मनोविज्ञान**ए** पृष्ठ **ए40**

4रू.उत्तराखंड दूरस्थ शिक्षा**ए 25**

5रू.छप्ैण्बण्पद ए